



व्यष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय

कक्षा 12 के लिए अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तक



12104



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

अप्रैल 2007 चैत्र 1929

पुनर्मुद्रण

अक्टूबर 2007, फ़रवरी 2009,
जनवरी 2010, जनवरी 2011,
दिसंबर 2012, फ़रवरी 2014,
दिसंबर 2015, फ़रवरी 2017,
फ़रवरी 2018, दिसंबर 2018,
जनवरी 2019, नवंबर 2019,
अगस्त 2021, और नवंबर 2021

संशोधित संस्करण

अक्टूबर 2022 कार्तिक 1944

पुनर्मुद्रण

मार्च 2024 चैत्र 1946

PD 15T SU

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007,
2022

₹ 90.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा रोयल ऑफ़सेट प्रिंटर्स, ए-89/1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-II, नयी दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की विक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस	
श्री अरविंद मार्ग	
नयी दिल्ली 110 016	फोन : 011-26562708
108, 100 फीट रोड	
हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे	
बनाशंकरा III स्टेज	
बंगलुरु 560 085	फोन : 080-26725740
नवजीवन ट्रस्ट भवन	
डाकघर नवजीवन	
अहमदाबाद 380 014	फोन : 079-27541446
सी.डब्ल्यू.सी. कैपस	
निकटः धनकल बस स्टॉप पनितरी	
कोलकाता 700 114	फोन : 033-25530454
सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स	
मालीगांव	
गुवाहाटी 781021	फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: अनूप कुमार राजपूत
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी)	: अमिताभ कुमार
सहायक संपादक	: गोविंद राम
सहायक उत्पादन अधिकारी	: सुनील कुमार

आवरण, सज्जा एवं चित्रांकन

निधि वधवा

कार्टोग्राफ़ी

इरफ़ान

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएंगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोझिलता की जगह खुशी का अनुभव उत्पन्न करने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और सार्थक बनाने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह के अध्यक्ष हरि वासुदेवन, प्रोफ़ेसर और अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार तापस मजूमदार, प्रोफ़ेसर की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के

विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मृणाल मीरी, प्रोफेसर एवं जी. पी. देशपांडे, प्रोफेसर की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनीटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी, जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन

कोविड-19 महामारी को देखते हुए, विद्यार्थियों के ऊपर से पाठ्य सामग्री का बोझ कम करना अनिवार्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री का बोझ कम करने और रचनात्मक नज़रिए से अनुभवात्मक अधिगम के अवसर प्रदान करने पर ज़ोर दिया गया है। इस पृष्ठभूमि में, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सभी कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित करने की शुरुआत की है। इस प्रक्रिया में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से ही विकसित कक्षावार सीखने के प्रतिफलों को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्य सामग्रियों के पुनर्संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है —

- एक ही कक्षा में अलग-अलग विषयों के अंतर्गत समान पाठ्य सामग्री का होना;
- एक कक्षा के किसी विषय में उससे निचली कक्षा या ऊपर की कक्षा में समान पाठ्य सामग्री का होना;
- कठिनाई स्तर;
- विद्यार्थियों के लिए सहज रूप से सुलभ पाठ्य सामग्री का होना, जिसे शिक्षकों के अधिक हस्तक्षेप के बिना, वे खुद से या सहपाठियों के साथ पारस्परिक रूप से सीख सकते हों;
- वर्तमान संदर्भ में अप्रासंगिक सामग्री का होना।

वर्तमान संस्करण, ऊपर दिए गए परिवर्तनों को शामिल करते हुए तैयार किया गया पुनर्संयोजित संस्करण है।

© NCERT
not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

तापस मजूमदार, एमेरिटस प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सलाहकार

सतीश जैन, प्रोफेसर, आर्थिक नियोजन तथा अध्ययन संस्थान, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य

हरीश धवन, लेक्चरर, रामलाल आनंद कॉलेज (सांध्य), नयी दिल्ली
पापिया घोष, शोध छात्रा, दिल्ली स्कूल ऑफ ईकोनोमिक्स, नयी दिल्ली
राजेंद्र प्रसाद कुंडु, लेक्चरर, अर्थशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता
सुगातो दास गुप्ता, एसोसिएट प्रोफेसर, सी.ई.एस.पी., जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नयी दिल्ली

तापसिक बनर्जी, शोध छात्र, आर्थिक नियोजन एवं अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

जया सिंह, लेक्चरर, अर्थशास्त्र, डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देने के लिए शिक्षाविदों तथा विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करती है। हम जलजीत सिंह, रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय को उनके योगदान के लिए धन्यवाद देते हैं। हम अपने सहकर्मियों- नीरजा रश्मि, रीडर, पाठ्यचर्या समूह; एम.बी. श्रीनिवासन, असीता रविंद्रन, प्रतिमा कुमारी, लेक्चरर, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग का उनके द्वारा प्रदत्त सामग्री तथा सुझाव के लिए उन्हें भी धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

हम स्व. दीपक बैनर्जी, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त) प्रेसीडेंसी कॉलेज, कोलकाता को उनके बेशकीमती सुझावों के लिए सदैव स्मरण रखेंगे। अगर उनका स्वास्थ्य साथ देता, तो हम उनके अनुभवों से और भी लाभान्वित होते।

विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों ने हर प्रकार से सहयोग प्रदान किया। परिषद् ए.के. सिंह, पी.जी.टी. (अर्थशास्त्र), वाराणसी, उत्तर प्रदेश; अंबिका गुलाटी, अध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, संस्कृत विद्यालय; बी.सी. ठाकुर, पी.जी.टी. (अर्थशास्त्र), राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सूरजमल विहार; रीतू गुप्ता, प्राचार्य, स्नेह इंटरनेशनल स्कूल; शोभना नायर, पी.जी.टी. (अर्थशास्त्र), मदर इंटरनेशनल स्कूल; रश्मि शर्मा, पी.जी.टी. (अर्थशास्त्र), केंद्रीय विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय कैपस के प्रति आभार व्यक्त करती है।

हम इनके प्रति भी आभारी हैं: शालिनी सिंह शोध छात्रा, जे.एन.यू., डी.डी. नौटियाल, पूर्व सचिव एवं भाषाविद, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग; रामतप पांडेय, पूर्व सहायक निदेशक, वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग; ओ.पी. अग्रवाल, प्रोफेसर (अवकाशप्राप्त), मेरठ विश्वविद्यालय; एच.के. गुप्ता, बाबूराम सर्वोदय बाल विद्यालय, शाहदरा, दिल्ली; रमेश चंद्रा, रीडर (सेवानिवृत्त), एन.सी.ई.आर.टी., प्रमोद कुमार झा, अनुवादक।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम सविता सिन्हा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें हर संभव सहयोग दिया।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए प्रभारी कंप्यूटर कक्ष, दिनेश कुमार; कॉपी एडिटर, विनय शंकर पांडेय एवं सतीश झा तथा प्रूफ रीडर, शहजाद हुसैन एवं बबीता झा, के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक की समीक्षा ओ.पी. अग्रवाल, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त); हरीश धवन, एसोसिएट प्रो. फेसर, मिरांडा हाउस; शालिनी सक्सेना, एसोसिएट प्रोफेसर, डी.सी.एस. एवं भारत गर्ग, सहायक प्रो. फेसर, श्याम लाल कॉलेज, विशेषज्ञों द्वारा की गई है। इनके योगदान को विधिवत स्वीकार किया गया।

परिषद् इस संस्करण के पुनर्संयोजन के लिए पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों, विषय सामग्री के विश्लेषण हेतु दिए गए महत्वपूर्ण सहयोग के लिए नीरजा रश्मि, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; एम.वी. श्रीनिवासन, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; जया सिंह, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; प्रतिमा कुमारी, एसोसिएट प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; असीता रविंद्रन, एसोसिएट प्रोफेसर, पी.एस.डी., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली; सबीता पटनायक, पी.जी.टी. अर्थशास्त्र, डी.एम.एस., आर.आई.ई., भुवनेश्वर; अनीता रविंद्रन, पी.जी.टी., अर्थशास्त्र, डी.एम.एस., आर.आई.ई., मैसूरू के प्रति आभार व्यक्त करती है।

परिषद् तम्पाकम्प्यूम अलन मुस्तफा, जे.पी.एफ.; अयाज अहमद अंसारी, मुकद्दस आजम, अमजद हुसैन, और फरहीन फातिमा, डी.टी.पी. ऑपरेटर का भी आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने इस पुस्तक को आकार देने में योगदान दिया है।

विषय-सूची

आमुख	iii
पाठ्यपुस्तकों में पाठ्य सामग्री का पुनर्संयोजन	v

1. परिचय

1.1 सामान्य अर्थव्यवस्था	1
1.2 अर्थव्यवस्था की केंद्रीय समस्याएँ	3
1.3 आर्थिक क्रियाकलापों का आयोजन	5
1.3.1 केंद्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था	5
1.3.2 बाज़ार अर्थव्यवस्था	6
1.4 सकारात्मक तथा आदर्शक अर्थशास्त्र	7
1.5 व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र	7
1.6 पुस्तक की योजना	8

2. उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत

2.1 उपयोगिता	9
2.1.1 गणनावचक उपयोगिता विश्लेषण	10
2.1.2 क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण	12
2.2 उपभोक्ता का बजट	16
2.2.1 बजट सेट एवं बजट रेखा	16
2.2.2 बजट सेट में बदलाव	19
2.3 उपभोक्ता का इष्टतम चयन	20
2.4 माँग	22
2.4.1 माँग वक्र तथा माँग का नियम	23
2.4.2 अनधिमान वक्रों तथा बजट बाध्यताओं से माँग वक्र की व्युत्पत्ति	25
2.4.3 सामान्य तथा निम्नस्तरीय वस्तुएँ	26
2.4.4 स्थानापन्न तथा पूरक	27
2.4.5 माँग वक्र में शिफ्ट	27
2.4.6 माँग वक्र की दिशा में गति और माँग वक्र में शिफ्ट	28
2.5 बाज़ार माँग	29
2.6 माँग की लोच	30
2.6.1 रैखिक माँग वक्र की दिशा में लोच	32
2.6.2 किसी वस्तु के लिए माँग की कीमत लोच को निर्धारित करने वाले कारक ..	34
2.6.3 लोच तथा व्यय	34

3. उत्पादन तथा लागत

3.1 उत्पादन फलन	42
3.2 अल्पकाल तथा दीर्घकाल	44
3.3 कुल उत्पाद, औसत उत्पाद तथा सीमांत उत्पाद	44
3.3.1 कुल उत्पाद	44
3.3.2 औसत उत्पाद	45
3.3.3 सीमांत उत्पाद	45
3.4 ह्रासमान सीमांत उत्पाद नियम तथा परिवर्ती अनुपात नियम	46
3.5 कुल उत्पाद, सीमांत उत्पाद तथा औसत उत्पाद वक्र की आकृतियाँ	47
3.6 पैमाने का प्रतिफल	48
3.7 लागत	49
3.7.1 अल्पकालीन लागत	49
3.7.2 दीर्घकालीन लागत	56

4. पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म का सिद्धान्त

4.1 पूर्ण प्रतिस्पर्धा: पारिभाषिक लक्षण	61
4.2 संप्राप्ति	62
4.3 लाभ अधिकतमीकरण	65
4.3.1 स्थिति 1	65
4.3.2 स्थिति 2	66
4.3.3 स्थिति 3	66
4.3.4 लाभ अधिकतमीकरण समस्या: आरेख द्वारा प्रदर्शन	68
4.4 एक फर्म का पूर्ति वक्र	68
4.4.1 एक फर्म का अल्पकालीन पूर्ति वक्र	69
4.4.2 एक फर्म का दीर्घकालीन पूर्ति वक्र	70
4.4.3 उत्पादन बंदी बिंदु	71
4.4.4 सामान्य लाभ तथा लाभ-अलाभ बिंदु	71
4.5 फर्म के पूर्ति वक्र के निर्धारक तत्व	72
4.5.1 प्रौद्योगिकीय प्रगति	72
4.5.2 आगत कीमतें	72
4.6 बाजार पूर्ति वक्र	73
4.7 पूर्ति की कीमत लोच	75

5. बाजार संतुलन

5.1 संतुलन, अधिमाँग, अधिपूर्ति	81
5.1.1 बाजार संतुलन: फर्मों की स्थिर संख्या	82
5.1.2 बाजार संतुलन: निर्बाध प्रवेश तथा बहिर्गमन	91
5.2 अनुप्रयोग	94
5.2.1 उच्चतम निर्धारित कीमत	95
5.2.2 निम्नतम निर्धारित कीमत	96